# छत्तीसगढ़ की साहित्यिक विभूतियाँ

डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया

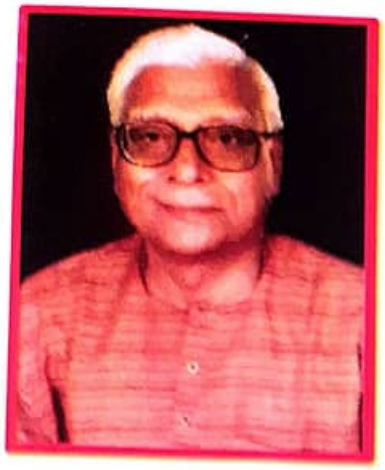

नाम : डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
जन्म स्थान: भौंरी (जिला बांदा–अब चित्रकूट, उ0प्र0)।
जन्मतिथि : 6 फरवरी, 1937।
सेवा : म0प्र0 के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य। स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से 31–12–1996 को सेवानिवृत्त।
योग्यता : एम.ए. (हिन्दी), पी.एच–डी. (सन्–1964) जबलपुर विश्वविद्यालय, विषय– हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार।
कृतियाँ : (1) हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार, (2) छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, (3) आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति, (4) हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, (5) बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकर (शोध निबंधों का संग्रह), (6) चिंतन– अनुचिंतन (समीक्षात्मक निबंध), (7) हिन्दी का प्रथम अज्ञात सुदामा चरित्र (संपादन), (8) वीर विलास (आल्हा संबंधी प्राचीनतम पांडुलिपि) (संपादन), (9) अरमान वर पाने का (व्यंग्य लेखों का संग्रह), (10) निंदक नियरे राखिये (व्यंग्य लेखों का संग्रह), (11) अथ काटना कुत्ते का भइया जी को (व्यंग्य संग्रह), (12) कर्म और आराधना (चिंतनपरक आलेख), (13) रचना से रचना तक (समीक्षात्मक लेखों का संग्रह), (14) तुलसी के तेवर, (15) रस विलास (संपादन), (16) मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव, (17) कभी–कभी यह भी (काव्य संग्रह), (18) नारी : एक अध्ययन, (19) बुंदेली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (संपादन), (20) मानस मनीषा (संपादन), (21) रूपक और साक्षात्कार, (22) विंध्यालोक (संपादन), (23) लोक वाटिका, (24) शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग, (25) रचना अनुशीलन (समीक्षा), (26) सृजन–विमर्श (समीक्षा), (27) खरी–खरी (काव्य), (28) संवाद : साहित्यकारों से, (30) मध्यकालीन काव्य, (31) बुन्देलखण्ड का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य, (32) बुन्देलीधारा के अनखुले पृष्ठ, (33) छत्तीसगढ़ की साहित्यिक विभूतियाँ।

# छत्तीसगढ़ की साहित्यिक विभूतियाँ

डॉ0 गंगाप्रसाद बरसैंया

प्रकाशक
देववाणी प्रकाशन
इलाहाबाद

**ISBN** : 978-93-84311-01-8

प्रकाशक : **देववाणी प्रकाशन**
331/176-ए/4, कृष्णनगर, कीडगंज
इलाहाबाद (उ.प्र.) 211 003

लेखक : **डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैया'**

संस्करण : **2015**

मूल्य : **200.00** रु0 (दो सौ रुपये मात्र)

मुद्रक : **भार्गव आफसेट**
बाई का बाग, इलाहाबाद

---

**Chhattisgarh Ki Sahityik Vibhutiyan :** By Dr. Ganga Prasad Gupta

**छत्तीसगढ़ की साहित्यिक विभूतियाँ** : द्वारा डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त

---

# अनुक्रम– संकेतिका


| | | |
|---|---|---|
| | पूर्वकथन | 5-6 |
| 1. | गोपाल मिश्र | 7-11 |
| 2. | रेवाराम बाबू | 12-15 |
| 3. | जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' | 16-20 |
| 4. | मेदिनीप्रसाद पाण्डेय | 21-24 |
| 5. | पंडित अनन्तराम पाण्डेय | 25-28 |
| 6. | माधवराव सप्रे | 29-32 |
| 7. | लोचन प्रसाद पाण्डेय | 33-37 |
| 8. | रामदयाल तिवारी | 38-41 |
| 9. | प्यारेलाल गुप्त | 42-45 |
| 10. | पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी | 46-49 |
| 11. | बाबू मावली प्रसाद श्रीवास्तव | 50-53 |
| 12. | मुकुटधर पाण्डेय | 54-57 |
| 13. | बलदेव प्रसाद मिश्र | 58-62 |
| 14. | पं0 श्यामलाल चतुर्वेदी | 63-67 |
| 15. | लाला जगदलपुरी | 68-72 |
| 16. | स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी | 73-77 |
| 17. | हरि ठाकुर | 78-82 |
| 18. | देवी प्रसाद वर्मा 'बच्चू जाँजगीरी' | 83-86 |
| 19. | नारायण लाल परमार | 87-91 |
| 20. | प्रभंजन शास्त्री | 92-95 |
| 21. | विमल कुमार पाठक | 96-100 |
| 22. | डॉ0 बलदेव | 101-104 |

# पूर्वकथन

साहित्य, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्व की दृष्टि से छत्तीसगढ़ प्रारंभ से ही महत्त्वपूर्ण प्रान्त माना जाता रहा है। वह अनेक पौराणिक संदर्भों से भी जुड़ा है। साहित्य की परम्परा भी सुदीर्घ, समृद्ध और सम्पन्न रही है। इतिहास के प्रारंभ से ही यहाँ के साहित्य-साधक अपना योगदान करते रहे हैं। उनकी संख्या सैकड़ों में है। आदिकाल से लेकर आज तक यहाँ के साहित्यकार समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलते रहे हैं। यहाँ की नाट्यशाला प्राचीनतम पुरातात्विक महत्त्व की है जो यहाँ की सर्जना और कला-प्रेम की द्योतक है। हिन्दी का प्राचीनतम नाटक 'कपटी मुनि' यहीं लिखा गया, हिन्दी की पहली कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' यहीं लिखी गई, हिन्दी समालोचना का प्रारंभ यहीं से हुआ और छायावाद के प्रवर्तक छत्तीसगढ़ की ही विभूति हैं। इतने सारे गौरव एक साथ कम प्रान्तों को प्राप्त होते हैं।

छत्तीसगढ़ प्रान्त का नया गठन सन् 2000 में हुआ था। नये प्रान्त निर्माण के साथ ही सभी क्षेत्रों में विकास के नये द्वार खुले। शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। अनेक महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। नये-नये विषयों का पठन-पाठन प्रारंभ हुआ। शोध-कार्यों में पर्याप्त प्रगति हुई, परन्तु इस प्रगति को सुव्यवस्थित दिशा नहीं दी गई। शोधार्थियों ने अपनी-अपनी रुचि के विषय चुने। यहाँ-वहाँ फुटकर कार्य हुए। एक ही विषय की अनेक जगह पुनरावृत्ति हुई। विश्वविद्यालयों ने योजना बनाकर कार्य नहीं कराया। फलतः बिखराव ही अधिक हुआ। यदि कोई ठोस शोधकार्य सामने आया तो उसके प्रकाशन और प्रचार-प्रसार की ओर ध्यान नहीं दिया गया। यह बात मैं विशेषरूप से हिन्दी विषय के संबंध में कह रहा हूँ। इसका दुष्परिणाम यह है कि आज भी तमाम साहित्यकारों के बारे में समुचित प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं है। अनेक पुराने साहित्यकार आज भी अछूते हैं। कई बार उनका नामोल्लेख भर मिलता है। यह गंभीर चिन्ता का विषय है। इस ओर शोधार्थियों, प्राध्यापकों तथा विश्वविद्यालयों को ध्यान देना चाहिए। प्रस्तुत संग्रह में संगृहीत रचनाकारों के बारे में मैंने इन तमाम कठिनाइयों का

प्रत्यक्ष अनुभव किया है। एक-एक तथ्य की खोज के लिए यहाँ-वहाँ भटकना पड़ा। आश्चर्य यह है कि यहाँ के अनेक विद्वान भी जानकारी न होने की बात कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं जबकि आजकल वहाँ रोज नये ग्रंथ और दर्जनों साहित्यिक पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

मैंने इन लेखों को अधिकाधिक प्रामाणिक बनाने के लिए विद्वान मित्रों, उपलब्ध ग्रंथों और संस्थानों से प्राप्त सामग्री का सहारा लिया है। कई मित्रों ने सामग्री उपलब्ध कराकर मेरी सहायता भी की है। छत्तीसगढ़ के प्रमुख साहित्यकारों में इतना व्यवस्थित परिचयात्मक ग्रंथ संभवतः पहली बार प्रकाशित हो रहा है। मुझे विश्वास है कि संकलित परिचयात्मक सामग्री जहाँ छत्तीसगढ़ की साहित्यिक विभूतियों के नये पक्ष उजागर करेगी, वहीं विद्वानों को संतोष होगा और पाठक तथा शोधार्थी लाभान्वित होंगे। विद्वानों से अनुरोध है वे मुझे नई जानकारी दें ताकि यदि कोई त्रुटि या कमी हो तो उसे अगले संस्करण में सुधारा जा सके।

आशा है साहित्य-जगत् इसे सहर्ष स्वीकार करेगा।

छतरपुर (म0प्र0)
06 फरवरी, 2015

डॉ0 गंगा प्रसाद बरसैंया
सेवा-निवृत्त प्राचार्य,
12- एम0आई0जी0, चौबे कालौनी,
छतरपुर (म0प्र0) 471001
मो0 - 09425376413

शोध निर्देशन : 12 शोध छात्रों को मेरे निर्देशन में पी.एच–डी. की उपाधि प्राप्त।

लघु शोध प्रबंध : लगभग 20 लघुशोध प्रबंध निर्देशन में प्रस्तुत।

संपादन : 'नव–ज्योति', 'राष्ट्रगौरव', 'संज्ञा' व 'बंधु' पत्रिकाओं का संपादन।

सम्मान–पुरस्कार–अलंकार :

1. महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ0 शंकरदयाल शर्मा द्वारा अ0भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन की 'साहित्य श्री' उपाधि से सम्मानित तथा सम्मेलन द्वारा सर्वोच्च राष्ट्रीय अलंकरण 'भारत भाषा भूषण' व सरस्वती सम्मान ।
2. म0प्र0 लेखक संघ भोपाल का डॉ0 संतोष तिवारी समीक्षा सम्मान व पुरस्कार 2005 में म0प्र0 में महामहिम राज्यपाल डॉ0 बलराम जाखड़ द्वारा अलंकृत।
3. कादंबिनी क्लब जबलपुर म0प्र0 द्वारा अखिल भारतीय 'सेठ गोविंददास पुरस्कार' से अलंकृत।
4. अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'साहित्य वारिधि' अलंकार।
5. लोक मंगल एवं लोक संस्कृति सेवा निधि ट्रस्ट, उरई, उ0प्र0 द्वारा 'गौरीशंकर द्विवेदी अलंकरण' एवं पुरस्कार।
6. बांदा जनपद का 'तुलसी पुरस्कार' तथा 'सार्वजनिक अभिनंदन'।
7. वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद्, टीकमगढ़ द्वारा 'बुंदेल वारिधि' सम्मान।
8. बुंदेली विकास संस्थान, बसारी म0प्र0 द्वारा 'राव साहब बुंदेला' सम्मान।
9. हिन्दी प्रचारिणी सभा, कानपुर उ0प्र0 द्वारा 'साहित्य भारती' से अलंकृत।
10. अ0भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा 'विद्रोही' पुरुस्कार से पुरस्कृत।
11. लायंस क्लब छतरपुर द्वारा 'छतरपुर गौरव' सम्मान।
12. आकाशवाणी छतरपुर की सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य।
13. रामायण ट्रस्ट अयोध्या उ0प्र0 द्वारा 'पं0 रामकिंकर' सम्मान।
14. ओरछा महोत्सव व केशव जयंती समारोह समिति द्वारा 'मित्र मिश्र अलंकरण' एवं पुरस्कार।

प्रशासनिक अनुभव :

(1) 40 वर्षों तक हिन्दी के आचार्य, विभागाध्यक्ष एवं स्नातक व स्नातकोत्तर प्राचार्य, (म0प्र0 शासन के उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत महाविद्यालीन सेवा )

(2) दो वर्ष तक महाकवि केशव अनुसंधान केन्द्र ओरछा (रीवा वि0वि0) के संचालक (डायरेक्टर)।

स्थायी निवास : 12, एम.आई.जी., चौबे कॉलोनी, छतरपुर, म0प्र0 – 471001

दूरभाष : 07682–241024,

मोबाइल : 9425376413